बार्सिलोना में सालगिरह मुबारक

लेखन व चित्रः लाइसल वाइल

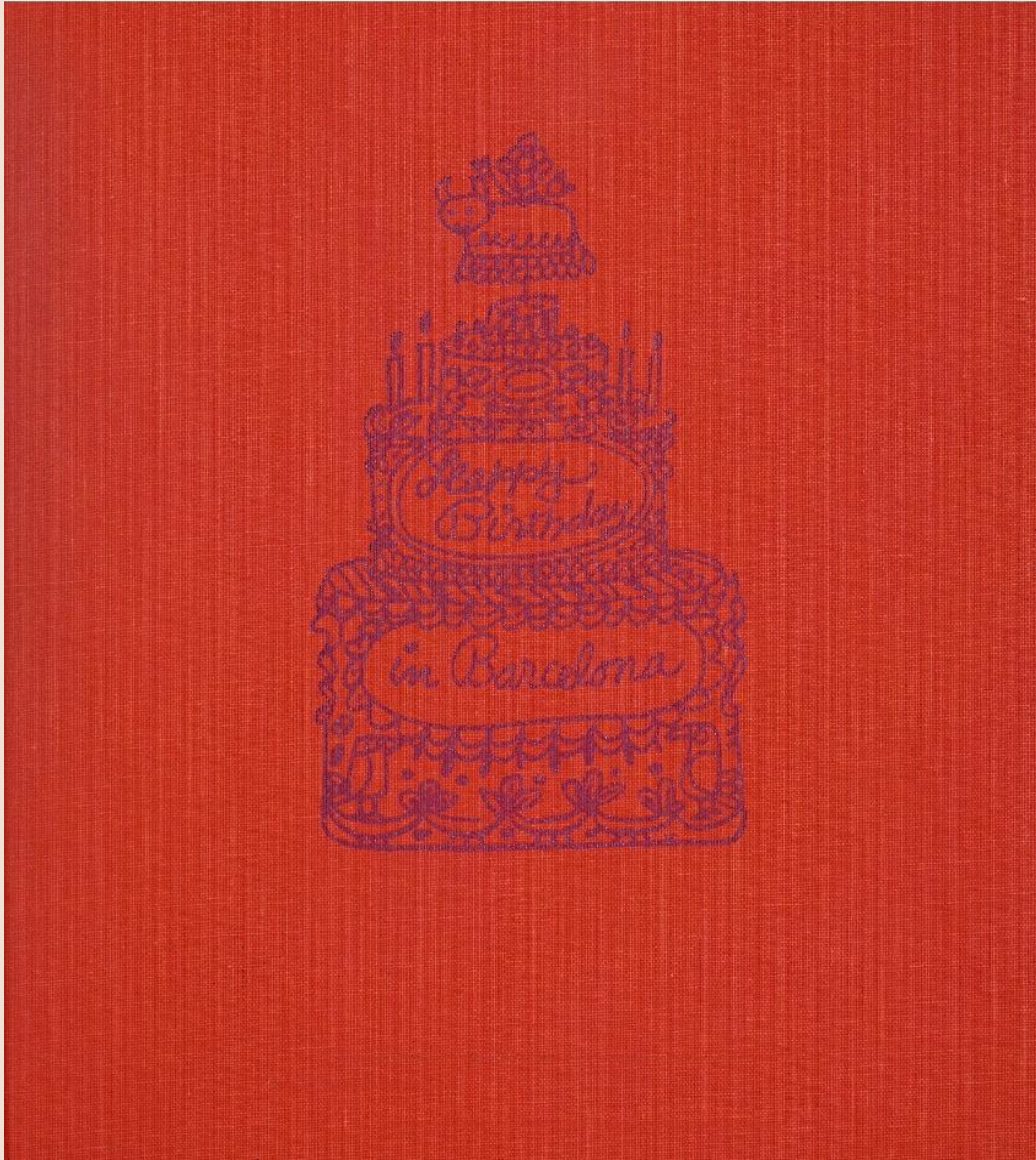
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



सालगिरह की दावत हर हालात में मौज-मस्ती और अचरजों से भरी होती है।

पर जब सालगिरह का केक धड़ाम से औंधा गिर पड़े, और दावत एक पालतू तोते की हो, जो मौके से फुर्र हो जाए, और वाकया बार्सिलोना का हो, और कहानी के लेखक व चित्रकार लाइसल वाइल हों, तो सालगिरह की दावत अजीबो-ग़रीब मोड़ ले सकती है। और सब देख ही सकेंगे कि इस कहानी में ठीक यही तो होता है।

युरोप के विभिन्न शहरों की पृष्ठभूमि में कही गई लाइसल की कहानियाँ लोगों का दिल बहलाने, उनका मनोरंजन करने में कभी नाकाम नहीं होतीं। आपमें से कोई भी जो बार्सिलोना गया है, वह पाएगा कि यह कहानी शहर की सटीक छवि पेश करती है, जिसमें बार्सिलोना के गॉथिक इलाके, राम्बाला तथा गाउदी के अधूरे कैथेड्रिल के दृश्य भी शामिल हैं।





बार्सिलोना में सालगिरह मुबारक

लेखन व चित्रः लाइसल वाइल
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



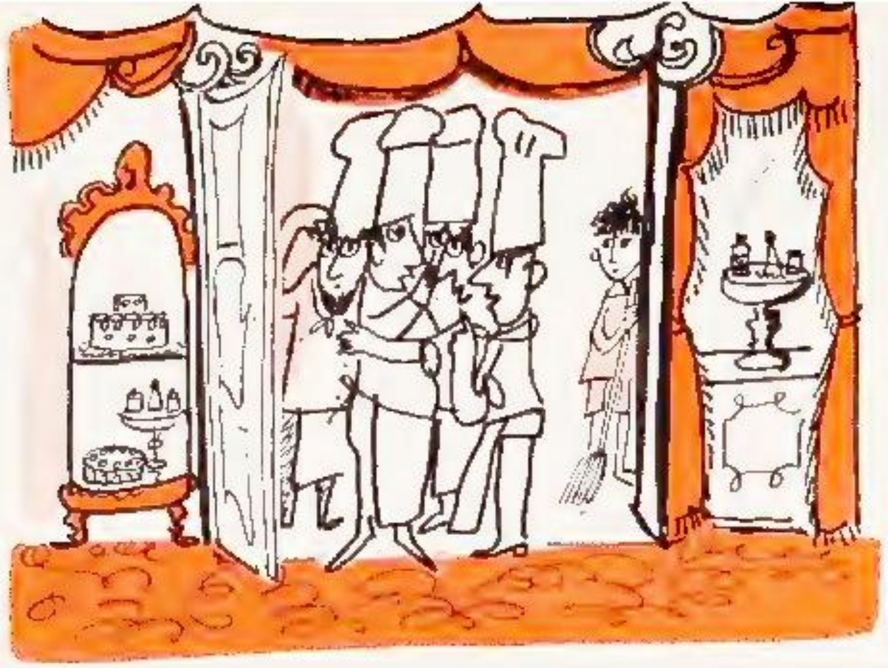
बार्सिलोना में ढेरों लोग रहते हैं। कुछ शहर के पुराने इलाकों में बसे हैं। तो कुछ नए इलाकों में।



यहाँ ला मार्कीसा ओलिवा एस्टाडा कारमेन डोलोरस एलवीरा मानोलीता देस लोस एस्टेबॉन रहती हैं।



और यहाँ कार्लीतो और उसका परिवार रहता है। कर्लीतो मुस्कुरा रहा है और खुश है, क्योंकि उसके पास बढ़िया काम है।



कार्लीतो एक बेहतरीन ‘कॉन्फेटेरिया’ (नान फ़रोश की दुकान) में काम करता है, जो स्पेन की सबसे उम्दा केक-पेस्ट्री की दुकान है।

आज का दिन ख़ास है, क्योंकि ला मार्कीसा ने अपनी इकलौती, प्यारी, दुलारी जीजी के सालगिरह के लिए एक बड़ा-सा केक बनाने को कहा है। हुक्म दिया है कि यह अब तक का सबसे बढ़िया केक होना चाहिए।

और सबसे शानदार भी . . . और केक सचमें है भी।





कार्लीतो को केक पहुँचाना है।

अपने दस्ताने के बटन बन्द कर लेना और





बड़ी सावधानी बरतना कार्लीतो।





जल्द ही कार्लीतो निकल पड़ता है। कितना खुशनुमा दिन है, थेड़ा गर्म ज़रूर है, पर फव्वारे के पास ठंडा। कर्लीतो पूरी सावधानी से बढ़ रहा है ताकि केक गिर-गिरा न जाए।

वह ला मार्कीसा की आलीशान हवेली की ओर बढ़ चला। हवेली के द्वार पर उसे उनका बटलर (प्रमुख सेवादार) मिला।

कार्लीतो ने मार्कीसा को पहले कभी रू ब रू देखा न था, पर अब उसने उनकी तमाम तस्वीरें देखीं। वे किसी भी तस्वीर में खुश नहीं नज़र आ रही थीं। वे किसी में मुस्कुराती नहीं दिखीं, एक भी तस्वीर में हल्की-सी मुस्कान तक नहीं थी।

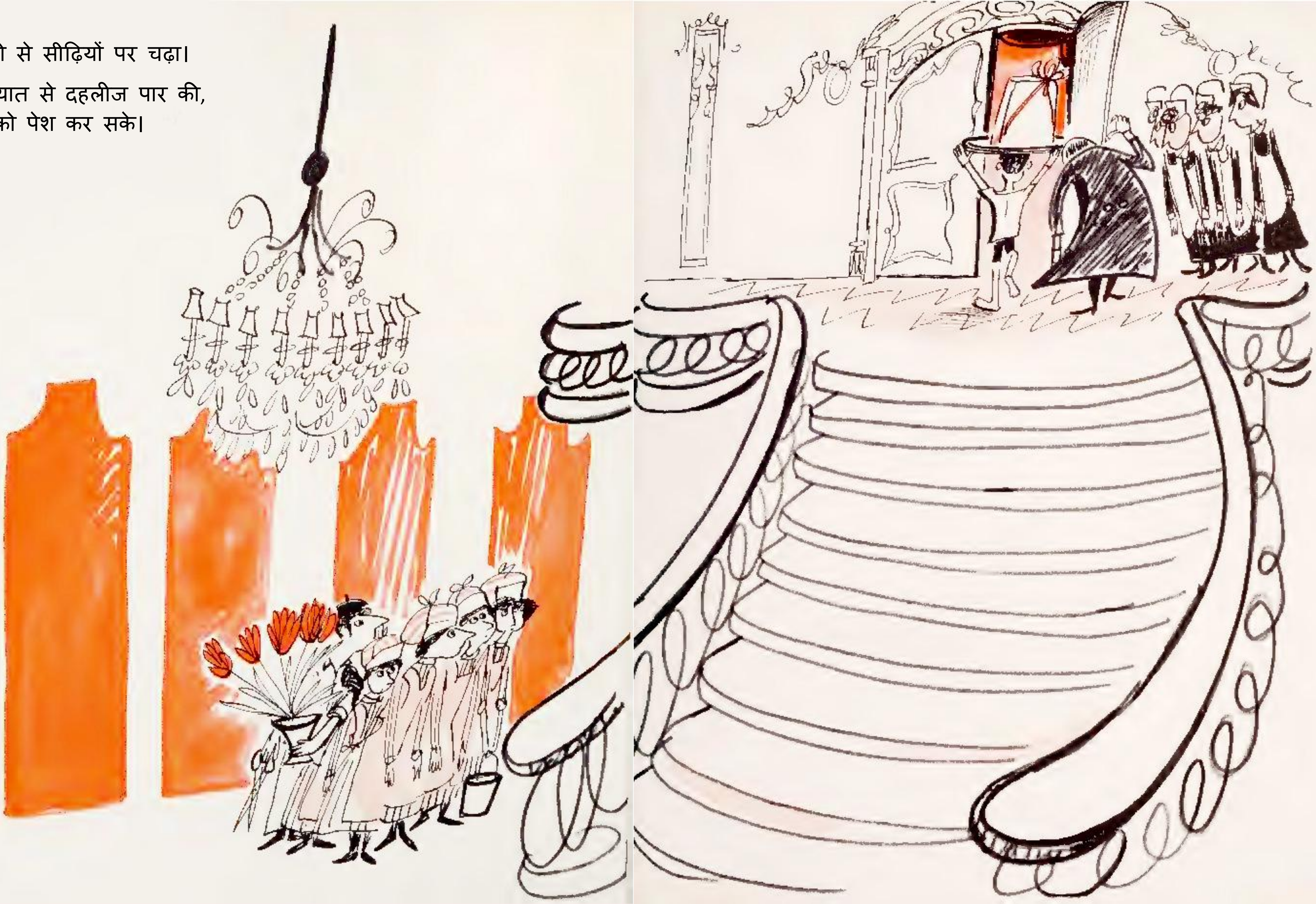


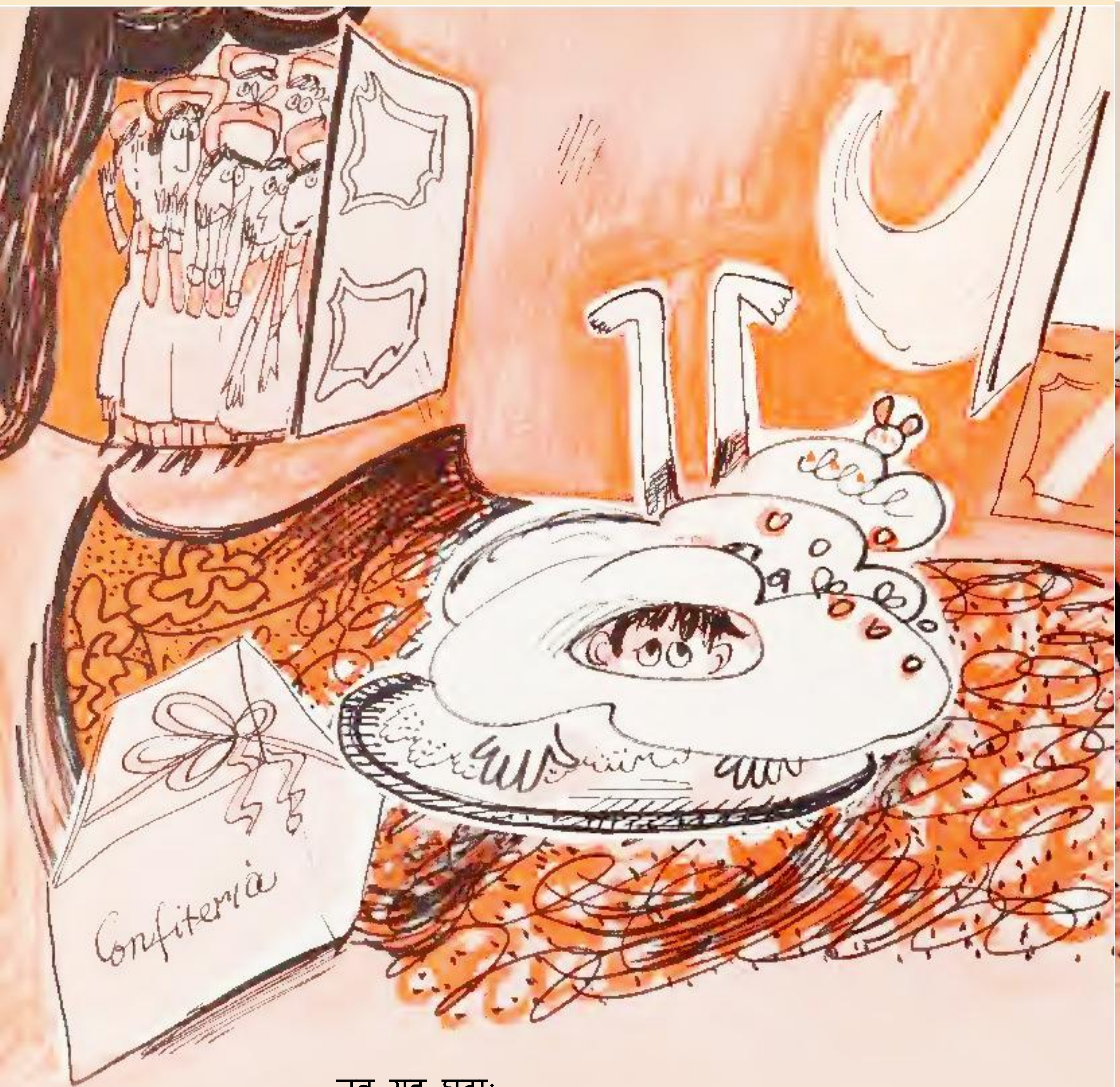


पर आज वे ज़रूर मुस्कुराएंगी तब, जब वे इस बेहतरीन केक को देखेंगी, कार्लीतो ने उम्मीद की।

वह सावधानी से सीढ़ियों पर चढ़ा।

उसने एहतियात से दहलीज पार की,
ताकि केक को पेश कर सके।





तब यह घटाः

उसे ठोकर लगी और केक उछल कर धड़ाम से नीचे गिरा। ओह, ओह, ओह, यह तो गज़ब था!



इस गड़बड़झाले के बीच जीजी कमरे से ही बाहर उड़ गई (जीजी ला मार्कीसा की प्यारी-दुलारी मादा तोता थी।)

बेचारी मार्कीसा तो लगभग बेहोश ही हो गईं।

ऊपरी तल्ले की सेविकाओं ने कहा, "पुलिस को बुलाओ!" निचले तल्ले की सेविकाओं ने कहा, "आग बझाने वालों को बुलाओ।"

पर प्रमुख सेवादार और बागवान बोले, "नहीं, नहीं, हमें पक्षियों और परिंदो के मित्र विभाग को ख़बर करनी चाहिए।"



सभी ने सुझाव तो दिए पर किसीने कुछ किया नहीं, इस दौरान जीजी चैक में इधर से उधर "ओले! ओले!" पुकारती उड़ती रही।

किस कदर नामुबारक थी यह सालगिरह। कार्लीतो ने सब मटियामेट कर डाला था। तो क्या वह अब कुछ नहीं कर सकता?

बेशक कर सकता है।

"मेरे साथ चलिए," कार्लीतो ने ला मार्कीसा से कहा।

"मैं कार्लीतो, आपकी जीजी को वापस लाऊंगा।"



और उसने जीजी को लगभग पकड़ भी लिया।

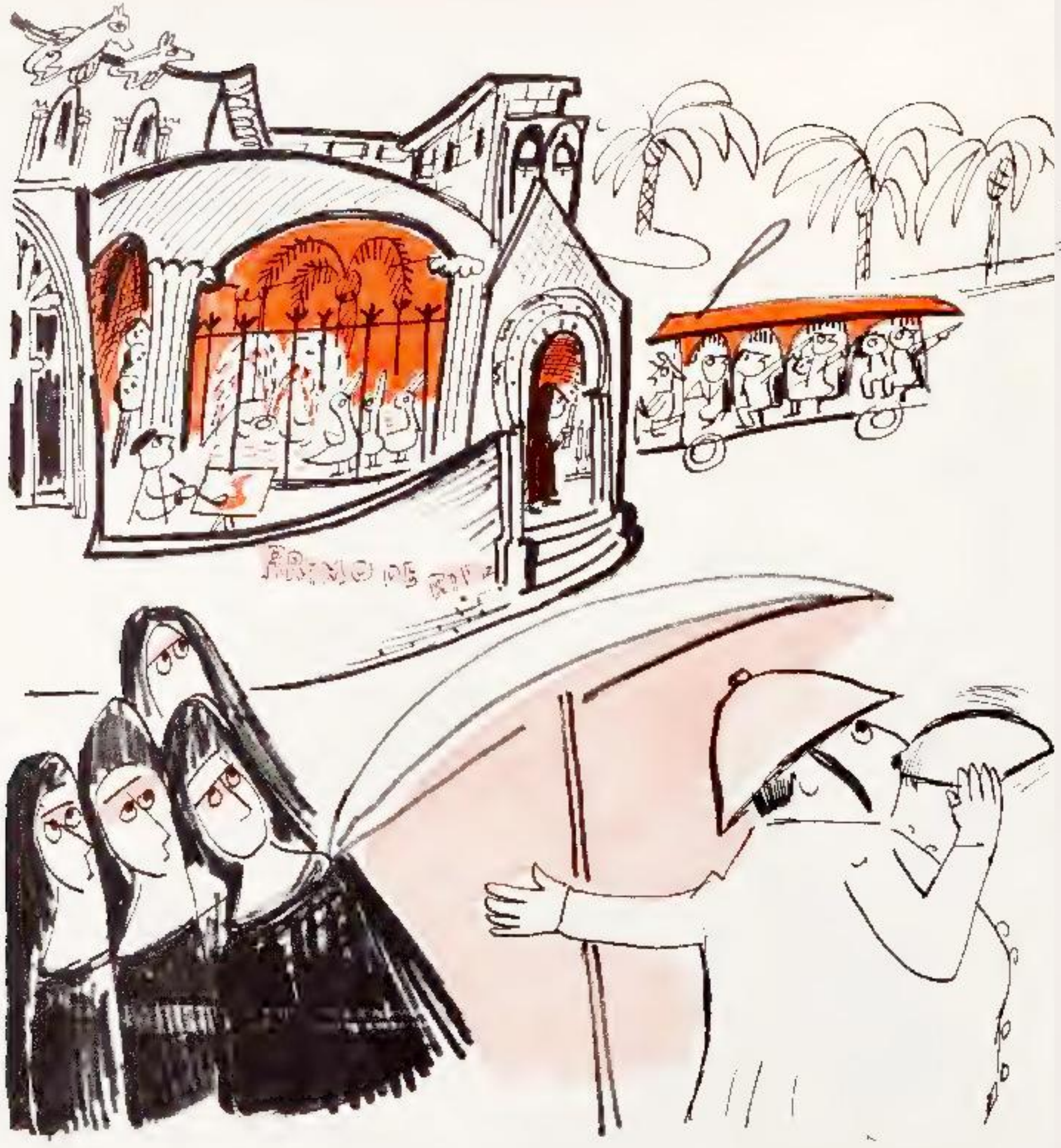
मतलब लगभग।

जीजी चौक में कार्लीतो को देख मुस्कुराई और उसने आँख भी मारी।

पर उसके दिमाग में कुछ और ही था . . .



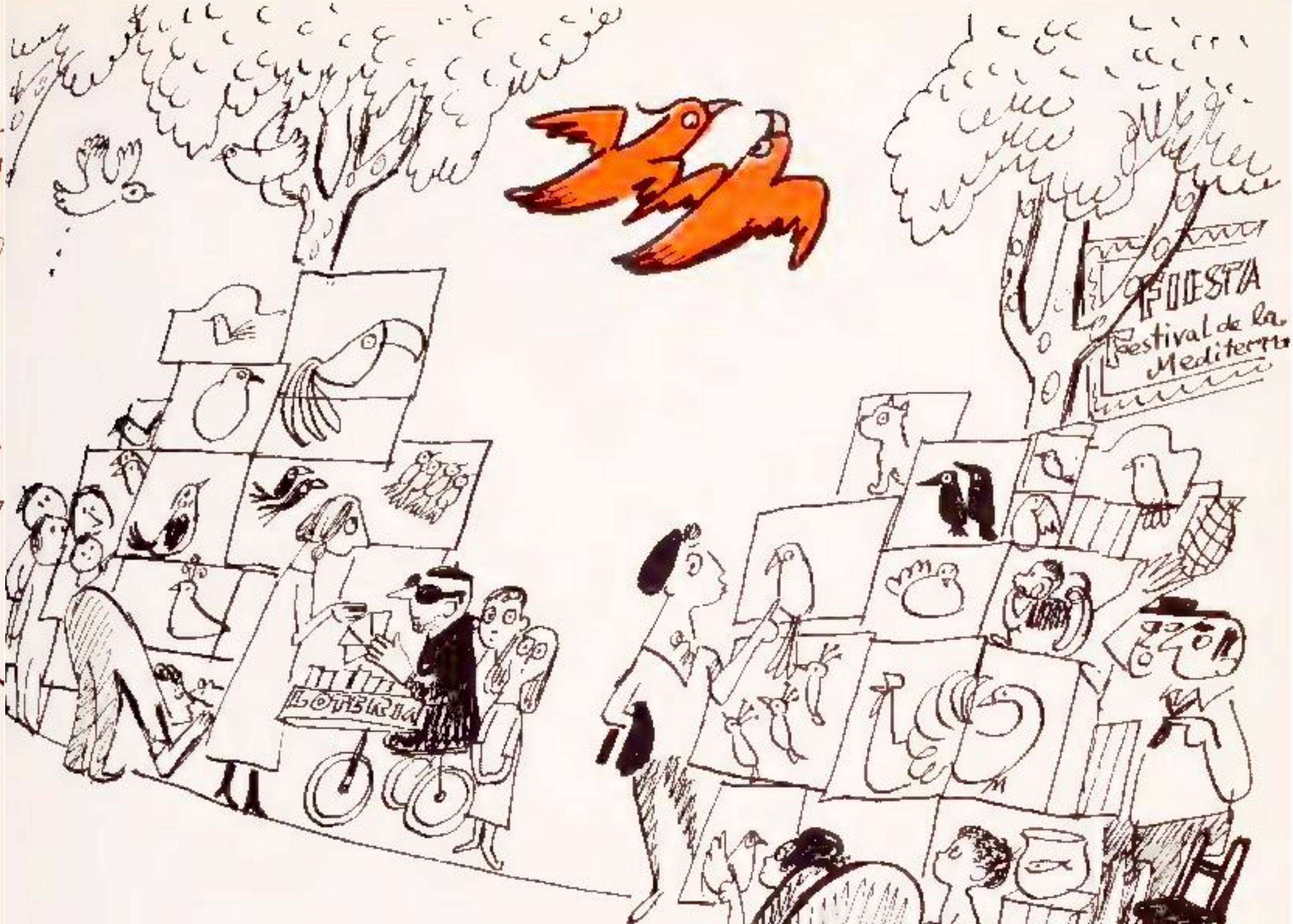
“फिक्र न करें,” कार्लीतो ने कहा। “हम जीजी के पास रहेंगे, और मैं उसे पकड़ लूंगा। पक्का!”



पर काम इतना आसान न था। जीजी बहुत ऊँचे उड़ रही थी।







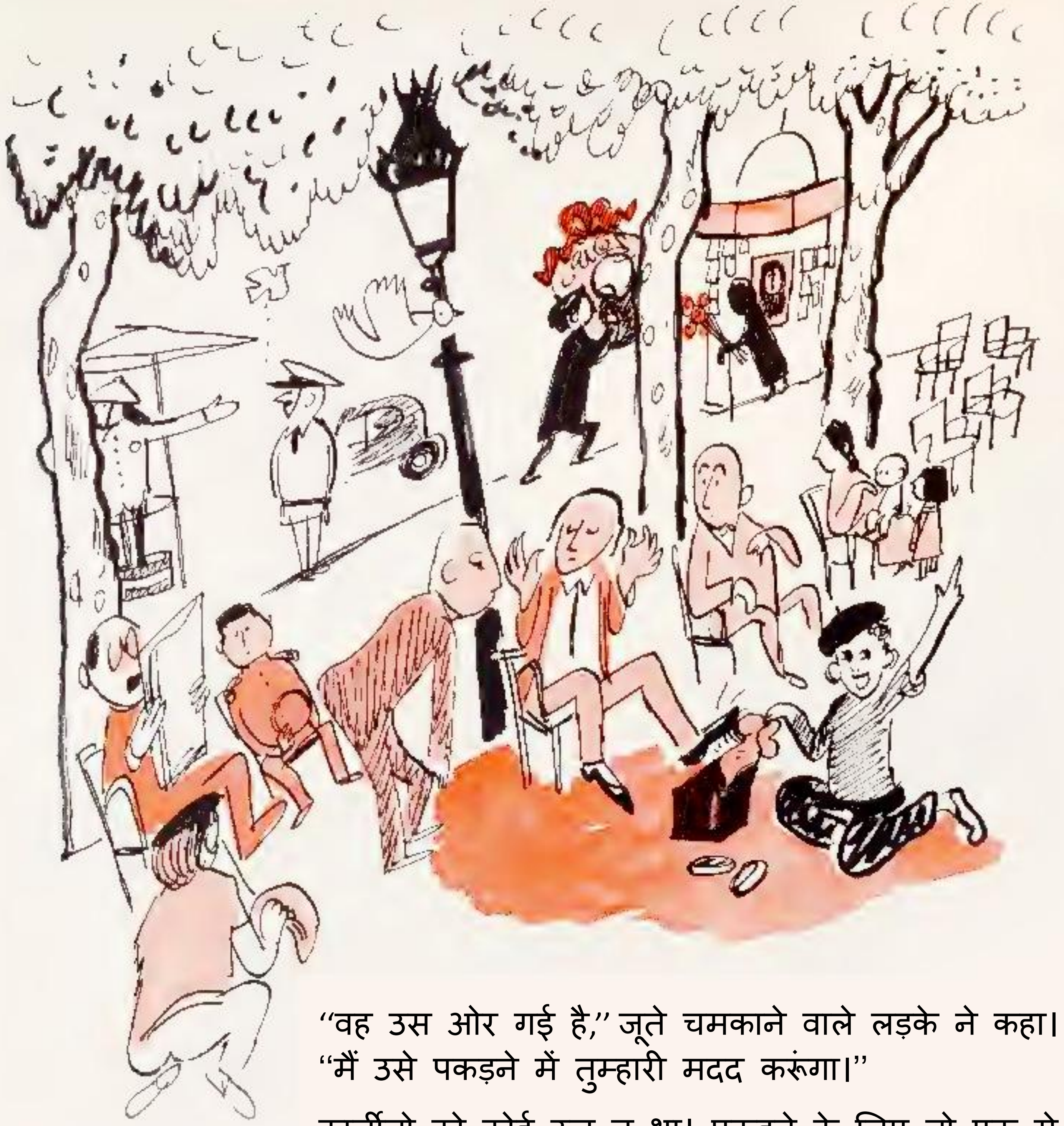


तब वह कुछ देर ठहरी भी - बस तब तक, जब तक दूसरे पालतू जानवर और पाखियों ने उसके पीछे आना तय न कर लिया।

पर जीजी आख़िर गई कहाँ?

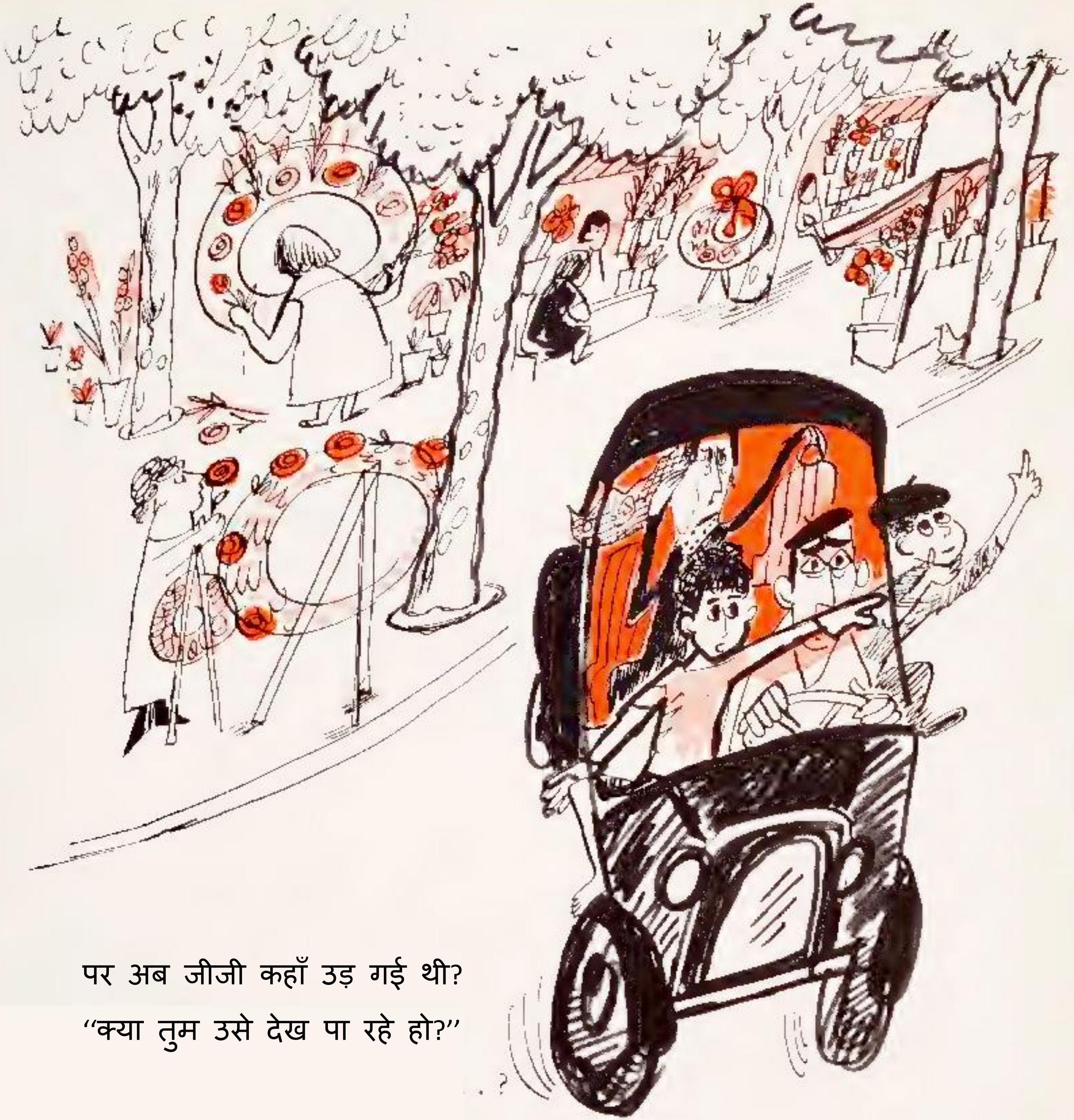
''क्या तुम उसे देख पा रहे हो?''





“वह उस ओर गई है,” जूते चमकाने वाले लड़के ने कहा। “मैं उसे पकड़ने में तुम्हारी मदद करूंगा।”

कार्लीतो को कोई उज्र न था। पकड़ने के लिए तो एक से भले दो जो होते हैं। और कार्लीतो को सचमें मदद की दरकार तो थी ही। ला मर्कीसा को भी बात ठीक लगी, क्योंकि वे अपनी प्यारी, दुलारी को वापस चाहती थीं . . . और उन्हें एक टैक्सी भी चाहिए थी, क्योंकि वे अब तक थक चुकी थीं।



पर अब जीजी कहाँ उड़ गई थी?

“क्या तुम उसे देख पा रहे हो?”

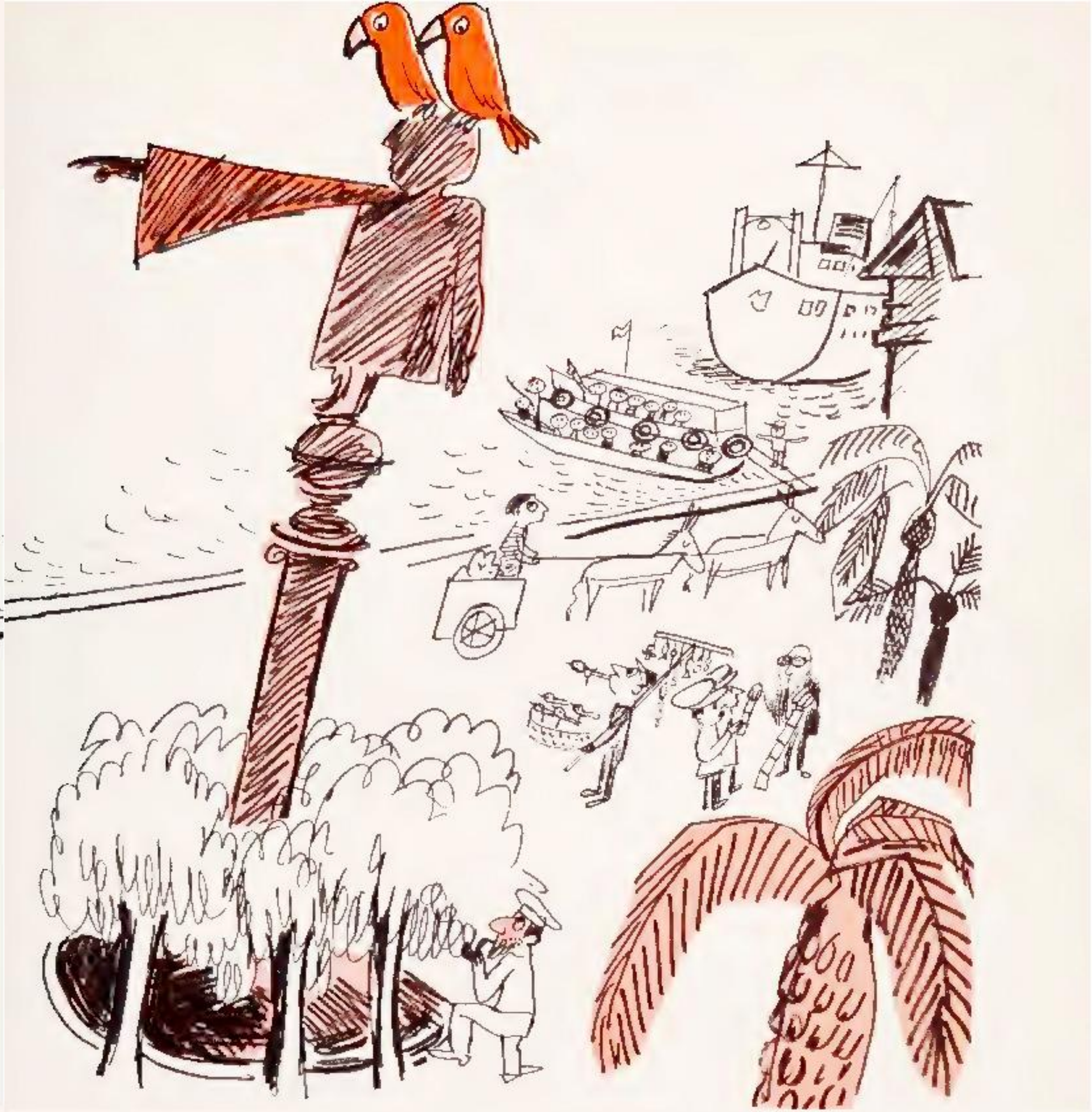
"वे वहाँ हैं, खंभे के ठेठ ऊपर!" गधे पर समान लाद बेचने वाला बोला। "उन्हें पकड़ने में मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।"

वे? उन्हें? कार्लीतो ने यह सुन ऊपर देखा। वहाँ, क्रिस्टोफर कोलम्बस की मूर्ति के सिर पर दो जीजीयाँ बैठी थीं।



दो तोते जो हू-ब-हू एक से लग रहे थे।





अब तो सचमें मदद चाहिए, कार्लीतो ने सोचा, ताकि मैं सही जीजी को पकड़ सकूं - क्योंकि मुझे दोनों ही तोतों को पकड़ना होगा। मतलब - जब वे नीचे आ जाएं।





पर दोनों तोतों के दिमाग में तो कुछ और ही था . . .



छिपम-छिपाई खेलने के लिए क्या उम्दा जगह थी यह। वहाँ इतनी मीनारें थीं कि लगता यह था कि हर जगह एक जीजी बैठी है।

''हम उन्हें पकड़ने में तुम्हारी मदद करेंगे,'' चर्च के बाहर खेलते बच्चों के झुंड ने कहा. . पर तोते बड़े तेज़ थे।



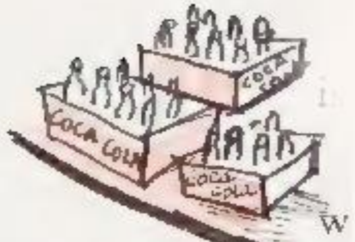
अगर मैं जीजी को पकड़ नहीं सका तो? ऐसे में भला क्या होगा?

कार्लीतो ने अपना डर छिपाने की कोशिश की और ला मार्कीसा ने अपनी रुलाई रोकने की।



ठीक उसी वक़्त दोनों जीजीयों ने तय किया कि वे अगली इमारत की ओर उड़ जाएंगी।





वहाँ अखाड़े में साँड के साथ लड़ाई शुरू होने वाली थी। अखाड़ा खचाखच भरा था एक भी सीट खाली न थी।

“माफ़ करें, ला मार्कीसा, समूची दुनिया दौलत के बदले भी मैं आपको अन्दर घुसने नहीं दे सकता,” अखाड़े के चौकीदार ने कहा।



तभी अचानक अखाड़े से ज़ोरदार हल्ला सुनाई दिया। चौकीदार तेज़ी से मुड़ा। वह तेज़तर्रार साँड से निडर फर्नान्डिस की मुठभेड़ का एक भी पल देखने से चूकना नहीं चाहता था।



पर निडर फर्नान्डिस सिर्फ़ साँड से नहीं लड़ रहा था।





''ओले-ओले!'' दोनों जीजीयों ने बार-बार दोहराया। फर्नान्डिस आग-बबूला हो गया और लोग हंसने लगे। साँड तक हंस पड़ा।

जब सब हंस रहे थे, कर्लीतो, ला मार्कीसा और उनके मददगार चुपके से अखाड़े में आ घुसे।

फर्नान्डिस का लबादा जीजीयों को पकड़ने के लिए बिलकुल सही था। सो इस बार कार्लीतो और उसके मददगारों ने दोनों को पकड़ ही लिया।



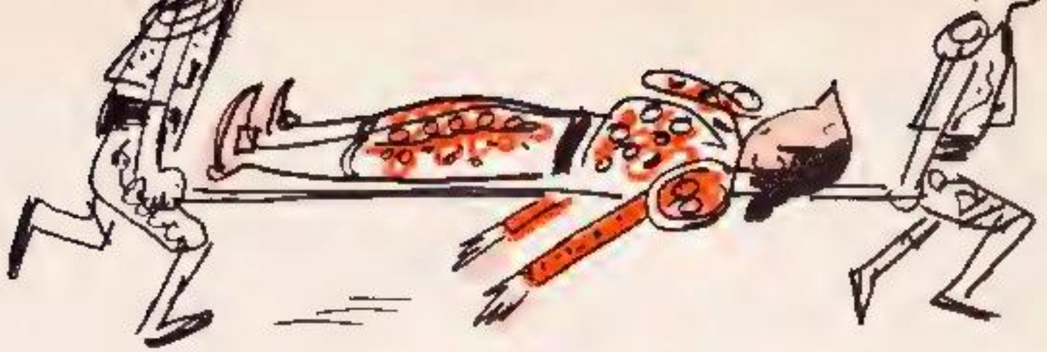


सबने वाहवाही की। लगभग सबने . . .



और कार्लीतो की किस्मत से, ला मार्कीसा आख़िरकार मुस्कुरा रही थीं, उनके चेहरे पर एक बड़ी-सी मुस्कान चस्पां थी। वे अपनी प्यारी, दुलारी को वापस पा बेहद खुश थीं। सिर्फ़ इतना ही नहीं। उनके पास अब प्यार करने को दो-दो प्यारी, दुलारियाँ भी तो थीं।

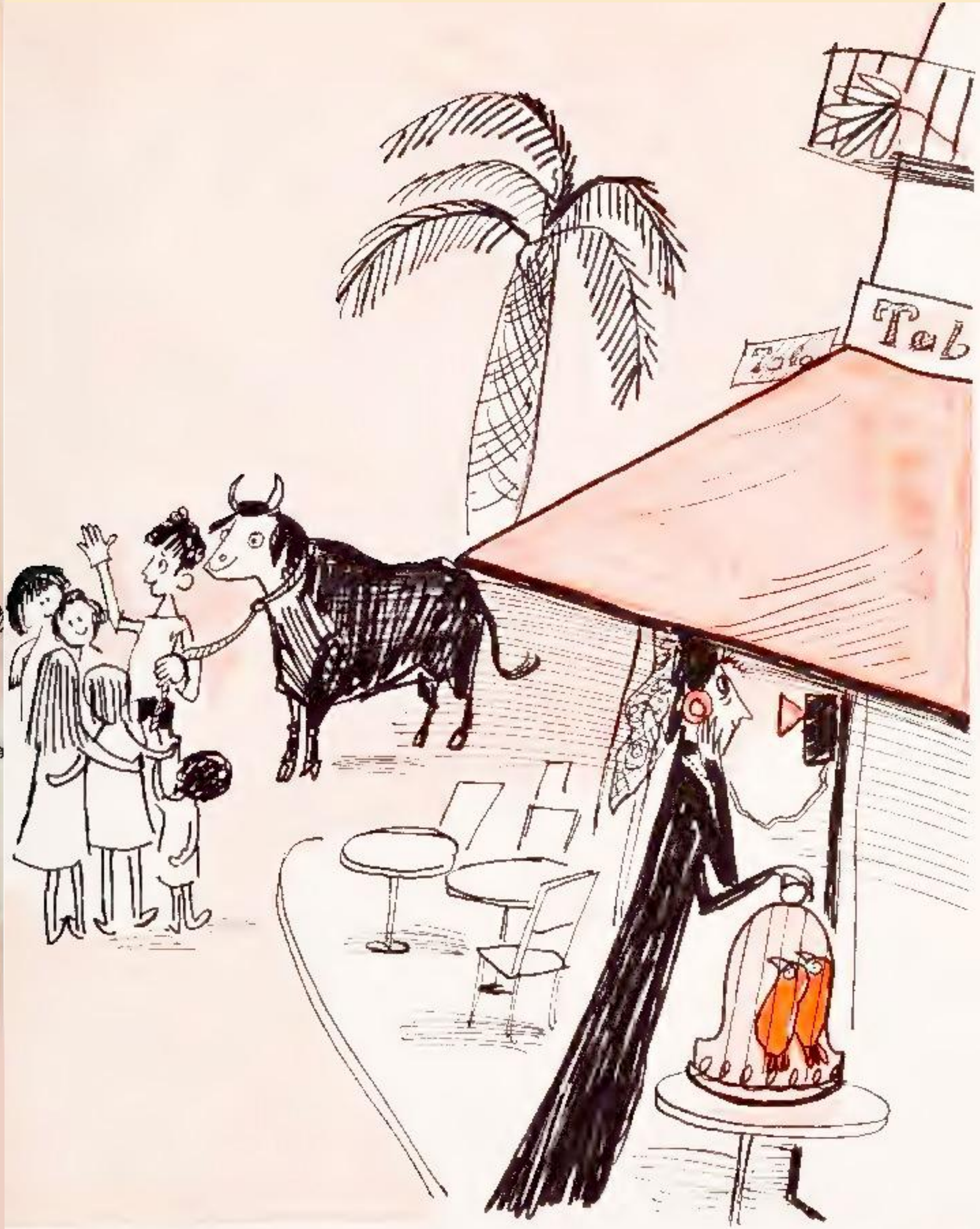






''आप इस साँड को भी ले जाएं,'' साँडों की लड़ाई करवाने वाले ने गुस्से से कहा। ''मेरे लिए यह बेकार है। किसी हंसने वाले साँड से भला कौन लड़ेगा?''



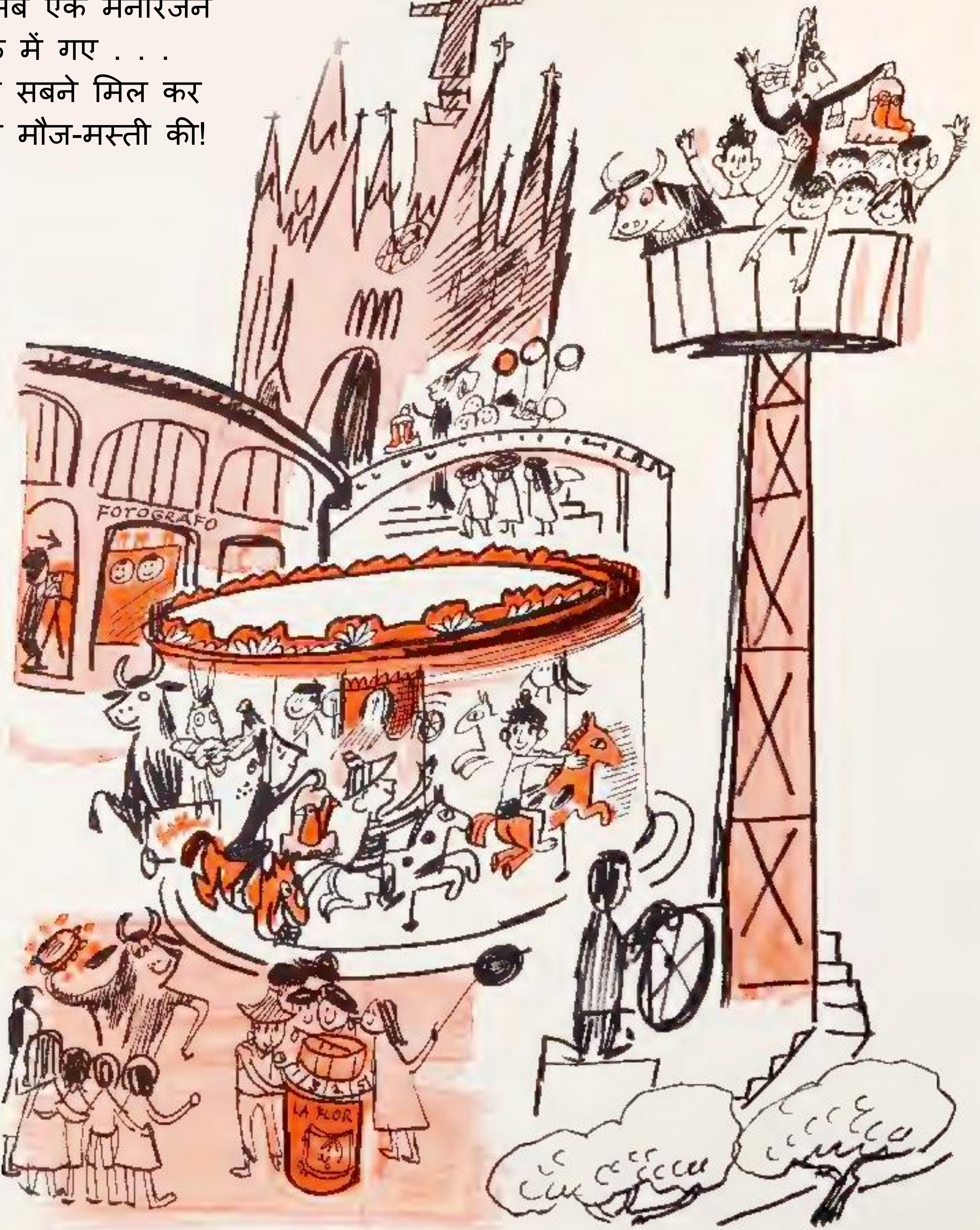


आज का दिन सचमें मुबारक है। खांटी मुबारक सालगिरह का दिन। ''कार्लीतो,'' ला मर्कीसा ने कहा।

''जश्न मनाने की जगह अब तुम ही चुनोगे।''

(उन्होंने नानफ़रोश की दुकान पर फोन कर यह भी बता दिया कि कार्लीतो को लौटने में देर होगी।)

वे सब एक मनोरंजन
पार्क में गए . . .
और सबने मिल कर
क्या मौज-मस्ती की!



एक हाथ में दोनों जीजीयों का पिंजड़ा पकड़े ला मार्कीसा ने
सोचा ही न था कि वे कभी इतनी ज़ोर से हंस भी सकती हैं।





सबने अपना-अपना भविष्य पढ़वाया। कार्लीतो ने ला मार्कीसा का भविष्य बताने वाला पर्चा पढ़ा। उस पर लिखा था:



''जुदाई किस कदर मीठा दुख होता है।'' ''नहीं,'' ला मार्कीसा ने कहा, मेरा एक बेहतर ख़याल है। मैं तुम्हें बताती हूँ, कार्लीतो।''

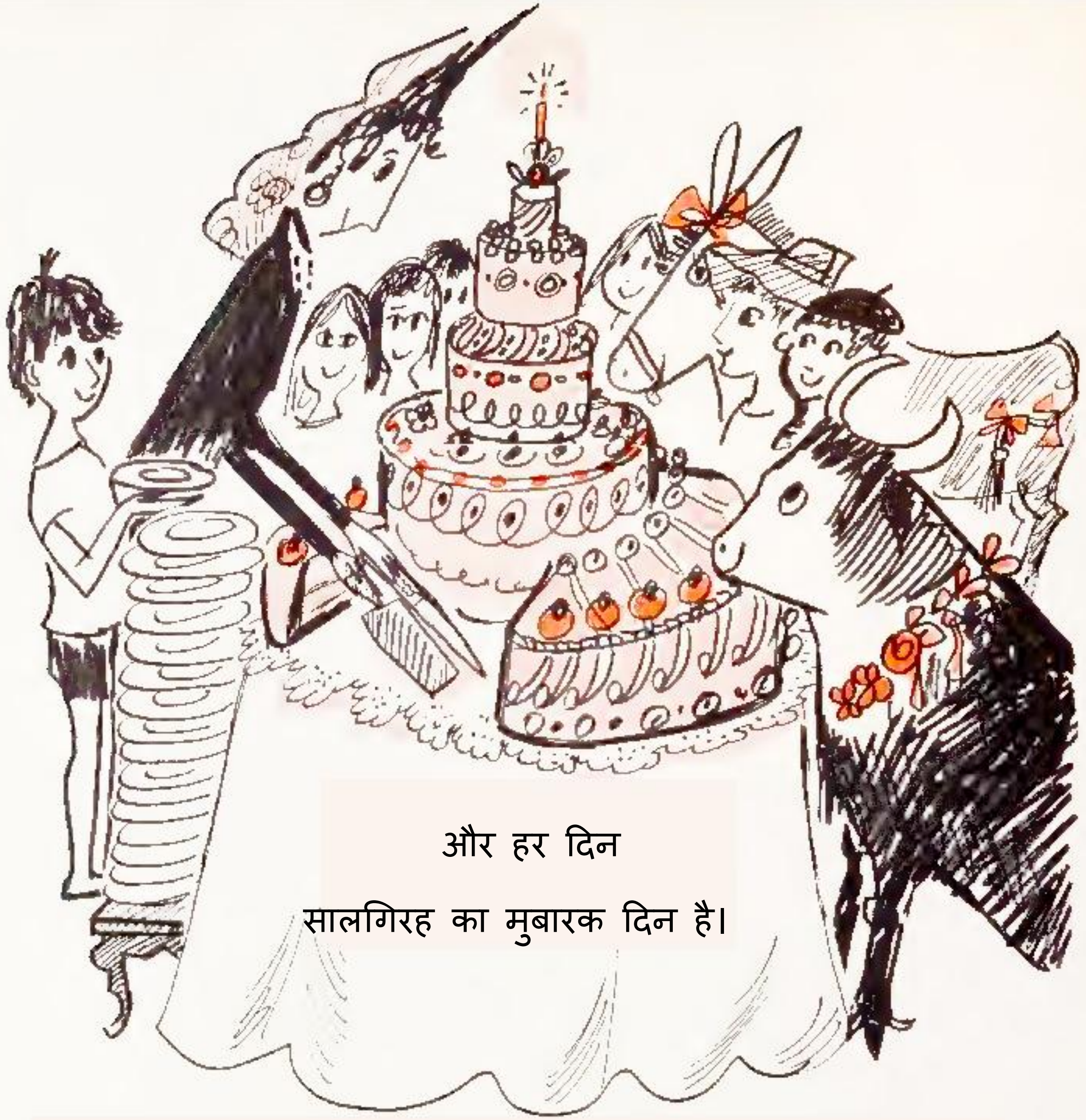


तो हुआ यह कि ला मार्कीसा की आलीशान हवेली में अब कई छुट्टियाँ मनाने वाले मेहमान हैं। हवेली अब सिर्फ़ उनकी नहीं है।



वह अब कार्लीतो और उनके सारे मददगारों और उनके दोस्तों की भी है।

उनके पास अब हंसने-खिलखिलाने की तमाम चीज़ें हैं।



और हर दिन

सालगिरह का मुबारक दिन है।

"ओले-ओले!" दोनों जीजीयाँ कहती हैं, मुस्कुराती और आँख मारती हुई।

